Toppersnotes®
Unleash the topper in you

मध्य प्रदेश

Hospital Assistant

मध्य प्रदेश कर्मचारी चयन बोर्ड (MPESB)

भाग - 1

सामान्य हिन्दी एवं अंग्रेजी

SIERRA INNOVATIONS

विषयसूची

S No.	Chapter Title	Page No.
1	रस	1
2	छंद	8
3	अलंकार	12
4	संधि	16
5	समास	28
6	मुहावरे	38
7	लोकोक्तियाँ	46
8	हिन्दी लेखकों का सामान्य परिचय एवं रचनाएँ	53
9	पत्र लेखन	59
10	निबंध लेखन	76
11	अपठित गद्यांश	109
12	अपठित पद्यांश	114
13	काव्य खंडः सूरदास के पद, तुलसीदास, देव, जयशंकर प्रसाद, निराला, नागार्जुन	117
14	गद्य खंड स्वयं प्रकाश, रामवृक्ष बेनीपुरी, यशपाल, मन्नू भंडारी	128
15	Tense (काल)	134
16	Modal Verb	141
17	Article (लेख)	148
18	Letter Writing (पत्र लेखन)	155
19	Essay Writing	166

1 CHAPTER रस

- काव्य का सबसे **प्राचीन संप्रदाय रस** को माना जाता है।
- सरल शब्दों में,काव्य को पढने या सुनने से जिस स्थायी भाव या आनंद की अनुभूति होती है, वही **रस** है।
- रस की अनुभूति का विशद चित्रण **आचार्य विश्वनाथ** ने अपनी पुस्तक **'साहित्य दर्पण'** में किया है-

सत्त्वोद्रेकादखंड-स्व-प्रकाशानंद-चिन्मयः ।
वेद्यान्तर-स्पर्श-शून्यो ब्रह्मास्वादसहोदरः ।।
लोकोत्तर-चमत्कारप्राणः कश्चित् प्रमातृभिः ।
स्वाकारवदभिन्नत्वेनायं आस्वाद्यते रसः ।।

उपरोक्त सूत्र के आधार पर रस की विशेषताएँ :

- रस अखंड है।
- रस वेद्यान्तर स्पर्श शून्य है।
- रस स्वप्रकाशानन्द तथा चिन्मय है।
- रस को ब्रह्मानन्द सहोदर माना गया है।
- रसानुभूति अलौकिक चमत्कार के समान है।
- रस को कुछ आचार्य सुख-दुखात्मक मानते हैं।
- रस मूलतः आस्वाद रूप है।

  आचार्य भरत मुनि ने "विभावानु भाव व्यभिचारि संयोगादस निष्पत्तिः"के माध्यम से विभाव,अनुभाव एवं व्यभिचारी भावों के संयोग से रस की निष्पति की व्याख्या की है।
- इन्होनें रसों की संख्या 8 (श्रृंगार, हास्य, करुण, रौद्र, वीर, भयानक, वीभत्स, और अद्भुत) मानी है जबकि काव्यशास्त्र में प्रधान रसों की संख्या 9 मानी गई है।

महत्वपूर्ण तथ्य:

- सर्वप्रथम विस्तृत शास्त्रीय विवेचन करने के कारण **भरतमुनि** को **काव्य शास्त्र का प्रथम आचार्य** माना गया है।इन्होंने **हास्य रस** को **सुखात्मक रस** कहा है।
  - ✓ **भरतमुनि** ने अपने **नाट्यशास्त्र** में भावों की संख्या **49** मानी है। इनमें **33 संचारी भाव**, **8 स्थायी भाव**, और **8 सात्विक भाव** शामिल हैं।

- आचार्य विश्वनाथ का ग्रंथ **'साहित्यदर्पण'** काव्यशास्त्र का बड़ा ही प्रसिद्ध और लोकप्रिय ग्रंथ है। वे **रसवादी आचार्य** हैं। काव्य लक्षण की परिभाषा करते हुए उन्होंने कहा था, **" वाक्यं रसात्मकं काव्यम्"**। साहित्यदर्पण संस्कृत भाषा में लिखा गया साहित्य विषयक ग्रन्थ है जिसके रचयिता पण्डित विश्वनाथ हैं।
- भरतमुनि के रससूत्र के प्रमुख व्याख्याकार भट्ट लोलक, आचार्य शंकुक, भट्टनायक तथा अभिनवगुप्त हैं । जिनमे से रस सूत्र के तृतीय व्याख्याकार भट्टनायक ने " रससूत्र मे संयोग का अर्थ भोज्य भोजक संबंध " के रूप मे बताया हैं । इनका नाम हमे काव्यप्रकाश मे देखने को मिलता हैं ।
- आचार्य रामचंद्र शुक्ल एवं डॉ.नगेन्द्र, हिंदी के रसवादी आलोचक माने जाते है।
- शांत रस के संस्थापक **उद्भट्ट** है।
- दंडी ने शांत रस को नाटक में अनुभव-योग्य माना है।
- 'रस सिद्धांत' के लेखक डॉ.नगेन्द्र है।
- दसवें रस के रूप में 'वात्सल्य रस' की स्थापना आचार्य विश्वनाथ ने की है।
- 'रूपगोस्वामी' ने 'मधुर' नामक ग्यारहवें रस की स्थापना की, जिसे 'भक्ति रस' के रूप में मान्यता मिली। रूप गोस्वामी को भक्ति-रस का संस्थापक माना जाता है।
- अभिनव गुप्त के अनुसार रस के नौ प्रकार हैं ।

रसावयव

- रस की सामग्री ही **रसावयव** कहलाती है।

" विभावानुभावव्यभिचारिसंयोगाद्रस-निष्पत्तिः।"

- अर्थात विभाव, अनुभाव और व्यभिचारियों के संयोग से रस की निष्पत्ति होती है।

इस प्रकार से रस के 4 अवयव होते है-

1. **स्थायी भाव**	➢ स्थायी भाव को **रस** का **मूल या जड़** माना गया है। ➢ काव्य-पठन या श्रवण के दौरान जो भाव संस्कार के रूप में ह्रदय के अंतःकरण में सदैव के लिए विद्यमान हो जाता है,वही स्थायी भाव है। ➢ स्थायी भावों की **संख्या 9** मानी गई है। ➢ रस एवं इनके स्थायी भाव इस प्रकार है- 1. श्रृंगार रस (रति/प्रेम), 2. वीर रस (उत्साह), 3.रौद्र रस(क्रोध), 4.हास्य रस (हास), 5.करुण रस (शोक), 6.भयानक रस (भय), 7.वीभत्स रस (जुगुप्सा/घृणा), 8.अद्भुत रस (विस्मय), 9.शांत रस (निर्वेद)। **नोट : वात्सल्य एवं भक्ति** को भी रस मानने पर स्थायी भावों की **संख्या 11** हो जाती है।
2. **विभाव**	➢ स्थायी भावों को जागृत करने वाले तत्व ही विभाव कहलाते है। ➢ स्थायी भाव के लिए यह प्रेरणास्त्रोत का कार्य करते है। ➢ विभाव दो प्रकार के माने गये है- ✓ **आलंबन विभाव :** जिस व्यक्ति या वस्तु के कारण रस की उत्त्पति होती है, उसे आलंबन विभाव कहते है। (जिन वस्तुओं या विषयों पर आलम्बित होकर भाव उत्पन्न होते हैं, उन्हें आलंबन संचारी विभाव कहते हैं।) इसे **आश्रय** और **विषय** नामक **दो उप-प्रकारों** में बाँटा जा सकता है। **1. विषयालंबन :** जिसके कारण या जिसके प्रति मन में भाव जगे वह 'विषयालंबन' कहलाता है। **उदाहरण :** कृष्ण के मन में राधा के प्रति रति भाव जाग्रत होता है, तो राधा विषय होंगी। **2. आश्रयालंबन :** जिसके मन में भाव जगते हैं उसे आश्रयालंबन कहते हैं। **उदाहरण :**कृष्ण के मन में राधा के प्रति रति भाव जाग्रत होता है, तो राधा' विषय होंगी। और कृष्ण' आश्रय होंगे। ✓ **उद्दीपन विभाव :** जिन वस्तुओं या परिस्थितियों को देखकर स्थायी भाव उद्दीप्त होने लगता हैं उसे उद्दीपन विभाव कहते हैं । इसमें बाहरी परिस्थितियों एवं चेष्टाओं को शामिल करते है।
3. **अनुभाव**	➢ मनोगत भावों (रति, हास) को व्यक्त करने वाली चेष्टाएँ अनुभाव कहलाती है। ➢ उदाहरण के लिए, श्रृंगार रस का अनुभाव **रोमांच या अश्रु** हो सकते है। ➢ अनुभाव के **4 भेद** है : **1. आंगिक :** 2. **वाचिक :** भाव दशा के कारण वचन मे आयें परिवर्तन को वाचिक अनुभाव कहते हैं । 3. **आहार्य (आरोपित) :** 4. **सात्विक (बिना प्रयत्न के) :**सत्त्व के योग से उत्पन्न आंगिक चेष्टाएं। सात्विक : स्तंभ , स्वेद , रोमांच , कंप , वैवर्ण्य , अश्रु , प्रलय।
4. **संचारी या व्यभिचारी भाव**	➢ रस-निष्पति के समय स्थायी भावों को पुष्ट करने के लिए बीच-बीच में अनेक भाव उठते है, जिन्हें **संचारी भाव** कहते है। ➢ ये अल्पकालिक होते है। ➢ इनकी **संख्या 33** मानी गई है जिनमें गर्व, मोह, शंका आदि शामिल है। (34वां संचारी भाव छल है जिसे कविदेव द्वारा जोड़ा गया)

स्मरणीय तथ्य:

- शृंगार रस को सर्वश्रेष्ठ रस होने के कारण **रसराज/रसपति** कहा गया है।
  - ✓ इसके **वियोग** एवं **संयोग** दो प्रकार है।
  - ✓ **बिहारी** और **घनानंद** को इसके सफल प्रयोक्ता माना जाता है।
- शांत रस को **अंतिम रस** माना गया है। संसार की असारता के कारण उत्पन्न हुए वैराग्य से **शांत रस** की उत्पत्ति होती है।
- विभिन्न काव्यगुण एवं निहित रस-माधुर्य गुण (शृंगार, करुण, शांत रस); ओज गुण (वीर, वीभत्स, रौद्र, भयानक रस); प्रसाद गुण (यह सभी रसों में निहित हैं)।
- **अपस्मार :** रस के अनुसार, अपस्मार 'संचारी भाव का एक प्रकार' है। संचारी भाव के भेद है - भरत मुनि ने 33 संचारी भाव माने है (निर्वेद, ग्लानि, शंका, असूया, मद, श्रम, आलस्य, देन्य, चिंता, मोह, स्मृति, घृति, ब्रीडा, चपलता, हर्ष, आवेग, जड़ता, गर्व, विषाद, औत्सुक्य, निद्रा, अपस्मार, स्वप्न, विबोध, अमर्ष, अविहित्था, उग्रता, मति, व्याधि, उन्माद, मरण, वितर्क)

रस भेद

रस	स्थायी भाव	संचारी भाव	अनुभाव	आलंबन	उद्दीपन	विभाव	उदाहरण
शृंगार रस (संयोग/विप्रलंभ(वियोग))	रति	हर्ष, औत्सुक्य, विषाद	हास-विलास, स्पर्श, लज्जा, चुम्बन	नायक-नायिका	सौन्दर्य, मधुर वचन, ऋतु-वर्णन	नायक-नायिका के परस्पर गुण और चेष्टाएँ	कालिदास का *अभिज्ञान शाकुंतलम्*
वीर रस	उत्साह	गर्व, धैर्य, तर्क, उग्रता,क्रोध,रोमांच,उग्रता	आँखें लाल होना, अंग संचालन, ललकार	शत्रु, ऐश्वर्य, यश	रणभूमि, शस्त्र, विजयगाथा	युद्धोपयोगी कार्य, पराक्रम	रामचरितमानस में *राम-रावण युद्ध*
हास्य रस	हास	लज्जा, विस्मय, आलस्य	ठहाका, मुस्कान, अंग-चालन	विकृत रूप, वेशभूषा	विकृत वाणी, विचित्र वेश	हाव-भाव, हास्यपूर्ण कथन	हरिशंकर परसाई की रचनाएँ
रौद्र रस	क्रोध	अमर्ष, मद, गर्व, उग्रता	दाँत पीसना, शरीर कम्पन, लाल आँखें	शत्रु, अपराधी, द्रोही	अपशब्द, छल, अन्याय	आक्रोश को प्रेरित करने वाले कार्य	दुर्गा सप्तशती में *महिषासुर वध*
वीभत्स रस	जुगुप्सा	निर्वेद, मोह, अपस्मार	नाक-भौं सिकोड़ना, घृणा-प्रदर्शन	मांस, रक्त, कीड़े, गंदगी	दुर्गन्ध, सड़ा-गला दृश्य	घृणास्पद वस्तु/व्यक्ति	शव या मांसाहार का वर्णन
करुण रस	शोक	विषाद, मोह, जड़ता	रोना, भाग्य को कोसना	प्रियजन, राष्ट्र, ऐश्वर्य-हानि	शव-दर्शन, विपत्ति, चिता	दुखद घटनाएँ	वाल्मीकि रामायण का *सीता-विलाप*

अद्भुत रस	विस्मय	आवेग, हर्ष, वितर्क	रोमांच, स्तम्भ, स्वेद	अलौकिक घटना, विचित्र दृश्य	आकस्मिक चमत्कार, विलक्षण कार्य	आश्चर्यजनक दृश्य/व्यक्ति	श्रीकृष्ण का *गोवर्धन धारण*
शांत रस	निर्वेद (वैराग्य)	धृति, स्मरण, मति	विषयों में अरुचि, संन्यास ग्रहण	उत्तम चरित्रवान व्यक्ति	तीर्थ, संत, दर्शन, शास्त्र	संसार की असारता, ईश्वर-चिन्तन	भगवद्गीता का *वैराग्य उपदेश*
वत्सल रस	वात्सल्य	हर्ष, औत्सुक्य / विषाद, चिन्ता	बच्चे को चूमना, गोद में लेना	शिशु, बालक	तुतली बोली, किलकारियाँ	अबोध कार्य	*यशोदा-कृष्ण लीला*
भक्ति रस	भगवत्प्रेम (भक्ति)	हर्ष, दैन्य, गर्व	रोमांच, नेत्रों में आँसू	ईश्वर	भक्ति-साहित्य का श्रवण	ईश्वर का गुणगान	सूरदास की *भक्ति कविता*

<u>साधारणीकरण</u>

- जब रस के सभी संघटक तत्व अपने विशिष्ट गुणों को त्यागकर सामान्य हो जाते है
- केवल कवि की अनुभूति का साधारणीकरण मनाने वाले विद्वान हैं - डॉ. नगेन्द्र।
- डॉ. नगेन्द्र के अनुसार, ''साधारणीकरण का अर्थ है काव्य के पठन द्वारा पाठक या श्रोता का भाव सामान्य भूमि पर पहुँच जाना। अर्थात इन्होने कवि की अनुभूति को साधारणीकरण माना।''
- रामचन्द्र शुक्ल ने साधारणीकरण पर विस्तृत विचार किया है। उनकी पहली स्थापना यह है कि ''साधारणीकरण आलम्बनत्व धर्म का होता है।'' दूसरा यह है कि ''जब तक भाव का कोई विषय इस रूप में नहीं लाया जाता कि वह सामान्यतः सबके उसी भाव को आलम्बन हो सके, तब तक उसमें रसोद्बोधन की पूर्ण शक्ति नहीं आती। विषय का इसी रूप में लाया जाना हमारे यहाँ साधारणीकरण कहलाता है।''

<u>स्मरणीय तथ्य:</u>

- 'कौतुकार्थ' अनुपयुक्त वचन या विकृत रूप रचना से आहलाद युक्त मनोविकार हो, तब हास्य रस होता है।
- जहाँ संस्कृत बहुल कथोपकथन हो, उसे भारती वृत्ति कहते हैं। भारत ने नाटक की और नाट्य शैली की 4 वृत्ति मानी है, जिसमें भारती वृत्ति सर्वप्रथम आती है ।
- सूरदास जी को वात्सल्य रस और श्रृंगार रस का सम्राट कहा जाता हैं ।
- शांत रस का अभिनय रूप मे निरूपण संभव नहीं हैं ।
- रीतिकाल मे हमे श्रृंगार रस की प्रधानता देखने को मिलती हैं ।
- विप्रलम्भ श्रृंगार में वियोग की 10 दशाएँ मानी गई हैं। इन दशाओं में अभिलाषा, चिंता, स्मरण, गुणाकथन, उद्वेग, प्रलाप, उन्माद, व्याधि, जड़ता और मरण शामिल हैं, जो वियोग के विभिन्न चरणों और तीव्रता को दर्शाती हैं।
- भूषण ने रीतिकाल मे वीर रस प्रधान काव्य लिखे हैं ।
- वीर, रौद्र, उग्र रसों में सात्त्वती नाट्यवृत्ति का प्रयोग होता है।
  - ✓ **सात्त्वती नाट्यवृत्ति:** जो वृत्ति 'सात्वत' गुण न्याय, तथा छंद से युक्त हो, जिसमें हर्ष अधिक तथा शोक का अत्यंत अभाव हो तो वह सात्वती वृत्ति होती है।
- अधिकांश: हास्य रस पर रचनाएँ करने वाले लेखक काका हाथरसी हैं ।

परीक्षा मे पूछे गए महत्वपूर्ण उदाहरण :

रस के प्रकार	उदाहरण	विवरण
करूण रस	हाय राम कैसे झेलें हम अपनी लज्जा अपना शोक। गया हमारे ही हाथों से अपना राष्ट्र पिता परलोक ।।	इन पंक्तियों में करूण रस है, इसमें वक्ता राम से लज्जा और शोक सहन कर सकने की असमर्थता को अभिव्यक्त कर रहा है, अत: करुण रस की अभिव्यक्ति हुई है। किसी प्रिय व्यक्ति या वस्तु के विनाश या अनिष्ट की आशंका से जागे शोक स्थायी भाव का विभावादि से पुष्ट होने पर करूण रस परिपाक होता हैं।
शांत रस	जहाँ सुमति तहँ संपति नाना, जहाँ कुमति तहँ विपति निदाना	इसका आलम्बन है -वैराग्य जनक वस्तुये अथवा परिस्थितिया ,संसार की नशवरता का ज्ञान परोपकारिता है। दिए गए पंक्ति का अर्थ है - व्यक्ति को सुख-समृद्धि पाने के लिए, प्रगति एवं विकास के लिए हमेशा सुबुद्धि से काम लेकर सुविचारित ढंग से अपना प्रत्येक कार्य निष्पादित करना चाहिए। सुमति का मार्ग ही मानव के कल्याण का मार्ग है।
भयानक रस	“उधर गरजती सिंधु लहरियाँ, कुटिल काल के जालों-सी, चली आ रही फेन उगलती, फन फैलाए व्यालों-सी”	इन पंक्तियों में भयानक रस है, इसमें सिन्धु नदी से उठने वाली लहरों के विकराल रूप की अभिव्यक्ति हुई है, अत: भयानक रस है। भयानक रस का **स्थायी भाव भय** है। भयंकर प्राकृतिक दृश्यों को देखकर अथवा प्राणों के विनाशक बलवान् शत्रु को देखकर उसका वर्णन सुनकर भय उत्पन्न होता हैं।
वात्सल्य रस	"मैया कवहि बढ़ेगी चोटी | किती बार मोहि दूध पिअत भई, यह अजहूँ है छोटी || तु जो कहति बल की बेनी ज्यौं, है है लाँबी मोटी | काढत गुहत न्हवावत ओछत, नागिनि-सी भुइँ लोटी ||"	इसका स्थायी भाव वात्सल्यता (अनुराग) होता है माता का पुत्र के प्रति प्रेम, बड़ों का बच्चों के प्रति प्रेम, गुरुओं का शिष्य के प्रति प्रेम, बड़े भाई का छोटे भाई के प्रति प्रेम आदि का भाव स्नेह कहलाता है यही स्नेह का भाव परिपुष्ट होकर वात्सल्य रस कहलाता है। |
श्रृंगार रस (वियोग)	"रे मन आज परिक्षा तेरी। सब अपना सौभाग्य मनावें।। दरस परस निःश्रेयस पावें। ऊद्धारक चाहें तो आवें। यहीं रहे तो आवें।"	यशोधरा गौतम बुद्ध के आने की प्रतीक्षा में अपने मन को समझाती हुई कहती हैं, कि हे मन आज तेरी परीक्षा की घड़ी है। अब तक मेरे प्रिय नही थे तो मै तुझ पर नियंत्रण रखती थी, लेकिन आज तुझे स्वयं पर खुद ही नियंत्रण रखना है, क्योंकि आज सौभाग्य का दिन है। आज मेरे प्रिय आ रहे हैं, जिनके दर्शन में मुझे परम सुख प्राप्त होगा। यशोधरा कहते हैं। कि मेरे प्रिय मेरे उद्धाकर बनकर जब चाहे आ सकते हैं, उनकी दासी उनका यहीं पर सदैव प्रतीक्षा करती रहेगी।
भयानक रस	एक ओर अजगरही लखि एक ओर मृगराय। बिअल बटोही बीच ही परयो मुरछा खाय।	उक्त पंक्ति से भयानक रस के प्रभाव उत्पन्न हो रहे है, क्योंकि यहाँ एक तरफ अजगर और एक तरफ शेर का भाव दिया हुआ है। अत: यहाँ सही विकल्प भयानक रस ही होगा।

ToppersNotes Unleash the topper in you

वीर रस	चढ़ चेतक पर तलवार उठा करता था भूतल पानी को। राणा प्रताप सर काट काट करता था सफल जवानी को ॥	जब किसी रचना या वाक्य आदि से वीरता जैसे स्थायी भाव की उत्पत्ति होती है, तो उसे वीर रस कहा जाता है।
श्रृंगार रस	अति मलीन वृषभान कुमारी। हरि श्रम जल अंतर तनु भीजै, ता लालच न धुआवत सारी।	दी गयी पंक्ति में यहाँ दी गयी पंक्तियों में 'प्रेम वियोग और 'दुःख' की बात की जा रही है। इस आधार पर यहाँ श्रृंगार रस होगा।
श्रृंगार रस	आजु की छबीली छबि छटा चित्त बेधि रही,कही नही जात कछु कौन गति भई है।	दी गयी पंक्तियों में रूप सौन्दर्य का बखान किया जा रहा है। इस आधार पर हम कह सकते हैं कि यहाँ श्रृंगार रस होगा। 'श्रृंगार रस' का स्थायी भाव 'रति' है। जब नायक नायिका के परस्पर मिलन, स्पर्श, आलिंगन, वार्तालाप आदि का वर्णन होता है तब वहाँ पर श्रृंगार रस होता है।
वीर रस	और जे टेकधरी मन माही, न छाँहि हौं कोऊ करै बहुतेरो। धाक यही है युधिष्ठिर की, धन धाम तजौ पै बोलन फेरों।	दी गयी पंक्ति में वीरता का भाव स्पष्ट हो रहा है। यहाँ यह भाव 'वीर रस' का बोध करा रहा है। इसका स्थायी भाव उत्साह है। युद्ध या कठिन कार्य करने के लिए जगा उत्साह भाव विभावादि से पुष्ट होकर वीर रस बन जाता हैं।
वात्सल्य रस	किलकत कान्हा घुटुरुवनि आवत। मनिमय कनक नन्द के ऑगन बिम्ब पकरिबे धावत।	इन पंक्तियों में श्री कृष्ण अपनी परछाई को पकड़ने की चेष्टा करते हैं। ऐसी अवस्था को देखने के लिए यशोदा कृष्ण को बार बार बुलाती है। इसलिए यहाँ वात्सल्य दिखाई पड़ता है।
वीर रस	जो संपित्ति शिव रावनहि, दीन दये दस माथ। सो संपदा विभीषनहिं, सकुचि दीन्ह रघुनाथ।	जो संपत्ति रावण को शिवजी ने दस सिरों की बलि चढ़ाने पर दी थी, वही संपदा श्री रघुनाथजी ने विभीषण को बड़े संकोच के साथ दी (यह सोचते रहे कि मैंने इस शरणागत भक्त को तुच्छ वस्तु ही दी)।
श्रृंगार रस	प्रीतम दृग मीचत पिया, पानि परस सुख पाय। जानि पिदनि अजान लौ, नैकु न होति लखय। ।	यहाँ दी गयी पंक्तियों में 'प्रेम' और 'सौन्दर्य' की बात की जा रही है। इस आधार पर यहाँ श्रृंगार रस होगा। नायक नायिका के सौंदर्य तथा प्रेम संबंधी वर्णन को श्रृंगार रस कहते हैं।
रौद्र रस	बोरौं सबै रघुबंस कुठार की धार में बारन बाजि सरत्यहि। बान की वायु उड़ाय के लच्छान, लल्छ करों अरिहा समरत्थहि।	दी गयी पंक्तियों में क्रोध के भाव का बोध हो रहा है। इस आधार पर यहाँ 'रौद्र' रस है। 'रौद्र रस' का स्थायी भाव 'क्रोध' है। जहाँ विरोध, अपमान या उपकार के कारण प्रतिशोध की भावना क्रोध उपजती है वही रौद्र रस साकार होता है।
हास्य रस	बुरे समय को देखकर, गंजे तू क्यों रोय, किसी भी हालत में तेरा, बाल न बांका होय दी गई	किसी वस्तु या व्यक्ति का विचित्र (असंगत) आकार अजीव ढंग की वेशभूषा, बातचीत और ऊटपटांग आभूषणों आदि को देखकर हृदय में जो विनोदपूर्ण भाव उत्पन्न हो जाता है, उसे हास कहते हैं।
वीभत्स रस	सिर पर बैठयों काग, आँख ओउ खात निकारत। खींचत जीभहिं स्यार, अति आनन्द उर धारत।	इन पंक्तियों में से शव को बांचते को और गिद्ध के घृणित विषय की प्रस्तुति के कारण यहाँ वीभत्स रस है। वीभत्स रस : जहाँ किसी वस्तु अथवा दृश्य के प्रति जुगुप्सा का भाव परिपुष्ट हो, वहाँ वीभत्स रस होता है।

अद्भुत रस	इहाँ उहाँ दुई बालक देखा। मतिभ्रम मोरि किआन विसेखा। देखिए राम जननी अकुलानी। प्रभु हंसि दीन्ह मधुर मुसकानी।	(वह सोचने लगी कि) यहाँ और वहाँ मैंने दो बालक देखे। यह मेरी बुद्धि का भ्रम है या और कोई विशेष कारण है? प्रभु राम माता को घबड़ाई हुई देखकर मधुर मुस्कान से हँस दिए। यह विचित्र विविरण अद्भुत रस दर्शाता है। इसका स्थायी भाव आश्चर्य होता है जब ब्यक्ति के मन में विचित्र अथवा आश्चर्यजनक वस्तुओं को देखकर जो विस्मय आदि के भाव उत्पन्न होते हैं उसे ही अदभुत रस कहा जाता है।
अद्भुत रस	''देख यशोदा शिशु के मुख में, सकल विश्व की माया क्षण भर को वह बनी अचेतन, हिल न सकी कोमल काया''।	उपर्युक्त काव्य पंक्ति में कृष्ण के मुख में सकल विश्व को देखकर विस्मय का भाव प्रकट होना 'अद्भुत रस' का संकेत करता है।
करुण रस	'करुणे, क्यों रोती है? उत्तर में और अधिक तू रोई। मेरी विभूति है जो, उसको भवभूति क्यों कहे कोई?	इन पंक्तियों में करुण रस है, इसमे वर्णित किया गया है कि उत्तर रामचरित नाटक में करुणा अधिक रोई है। इस रोने का कारण पूछा गया तो करुणा कहती है-उस नाटक की महत्ता मेरी विभूति के कारण ही संसार में हुई, किन्तु उसे कवि भवभूति की विभूति कहते हैं। भवभूति संसार की विभूति नहीं, न शिव की विभूति है।
भक्ति रस	मेरो मन अनत कहां सुख पावै। जैसे उड़ि जहाज कौ पंछी पुनि जहाज पै आवै।।	इन पंक्तियों में भक्ति रस है, इसमें भक्त की भगवान के प्रति श्रद्धा की उत्कृष्ट भावना का उल्लेख किया गया है कि भक्त का मन कहीं नहीं लगता जैसे जहाज का पंछी वापस लौट कर जहाज पर ही आ जाता है। जहाँ ईश्वर के प्रति प्रेम या अनुराग का वर्णन होता है वहाँ भक्ति रस होता है. भक्ति रस का स्थायी भाव देव रति है।
भक्ति रस	सियराम सरूप अगाध अनूप, बिलोचन मेनन को जलु है। श्रुति राम कथा मुख राम को नाम, हियें पुनि रामहि को थलु है।	इस काव्य पंक्ति का अर्थ है - आँखें श्री सीताराम जी के स्वरूप रूपी सरोवर में मन मछली बन जाए. राम कथा सुनने को मिले, मुख में राम नाम रहे, हृदय में राम रहें।
वात्सल्य रस	कर पग गहि अंगूठा मुख मेलत| प्रभु पौढ़े पालने अकेले हरषि:हरषि अपने संग खेलत |	इन पंक्तियों में वात्सल्य रस है, इसमें वर्णित किया गया है कि कृष्ण अपने पैर को हाथ में पकड़कर पैर का अंगूठा अपने मुह में लेते हैं और खुद ही खुश हो होकर अपने ही संग खेलते हैं।
शांत रस	"सबते होय उदास मन बसै एक ही ठौर। ताही सों सम रस कहत केसब कबि सिरमौर	इन पंक्तियों में शांत रस है, कवि केशवदास ने शम के कारण शांत रस को शम रस का नाम दे दिया है। संसार और जीवन की नश्वरता का बोध होने से चित्त में एक प्रकार का विराग उत्पन्न होता है परिणामत: मनुष्य भौतिक तथा लौकिक वस्तुओं के प्रति उदासीन हो जाता है, इसी को निर्वेद कहते हैं। जो विभाव, अनुभाव और संचारी भावों से पुष्ट होकर शान्त रस में परिणत हो जाता है।

2 CHAPTER

छंद

- यह संस्कृत के **'छन्दस्'** शब्द से बना है जिसका अर्थ **आह्लादन** करना है।
- जब किसी कविता की पंक्तियों को मात्रा,वर्ण, क्रम, लघु, गुरु, गण, यति, गति एवं तुक आदि के आधार पर नियोजित या व्यवस्थित किया जाता है तो उसे छंद कहते है।

  या
- जिस शब्द योजना में वर्णों या **मात्राओं और यति गति** का विशेष नियम हो, उसे **छंद** कहते हैं।
- आचार्य विश्वनाथ के अनुसार,**"छन्दोबद्ध पदं पदाम्"** अर्थात विशिष्ट छंद में बँधी हुई रचना को **छंद** कहा जाता है।"

छंद शब्द की व्युत्पत्ति छद् धातु से मानी जाती है, जिसके दो अर्थ लिए जाते हैं-

1. **'आच्छादन या आवृत्त करना (छंदि संवरणे):** इसका आशय यह है कि छंद शब्द और अर्थ की दरारें भर कर कथन को पाठक या श्रोता तक प्रभावशाली ढंग से पहुँचाने में सहायक होता है।
2. **'आह्लादित या दीप्त करना (छंदि आह्लादने दीप्तौ च):** तात्पर्य यह है कि छंद कविता में नाद-सौंदर्य और संगीतात्मकता उत्पन्न कर पाठक में आनंद की वृद्धि करता है। लय और उसके विशिष्ट रूप में एक ही प्रकार की ध्वनियों की आवृत्ति बार-बार सुनसे से श्रोता आनंदित होता है।

विशेष:
- **छंद का प्रथम** उल्लेख **ऋग्वेद** के **पुरुषसूक्त** में मिलता है।
- **छंद** पर सबसे **पहला लिखित ग्रन्थ छंदशास्त्र** है जिसकी **रचना पिंगल ऋषि** द्वारा की गई है। इन्हीं को **छंद शास्त्र** के **प्रणेता** के रूप में माना जाता है। इसीलिए **छंद** को **पिंगल** भी कह दिया जाता है।

छंद के अंग:

छंद के 7 मुख्य अंग माने गये है-

अंग	मुख्य विशेषता
पद / चरण / पाद	➢ छन्द के चार भाग होते हैं। ➢ प्रत्येक भाग को चरण/पद कहते हैं। ➢ प्रथम व तृतीय चरण को विषम चरण तथा द्वितीय व चतुर्थ चरण को सम चरण कहते है।
वर्ण	➢ एक स्वर वाली ध्वनि को वर्ण कहते हैं। **उदाहरण के लिए -** कनक में 3 वर्ण है। ➢ आधे वर्ण को गिनती में नहीं लिया जाता हैं । **उदाहरण के लिए** - उज्ज्वल में तीन ही वर्ण है।
मात्रा	➢ वर्ण के उच्चारण काल को मात्रा कहते हैं। ➢ लघु मात्रा की स्थिति में एक तथा गुरु मात्रा की स्थिति में दो की गणना की जाती है। ➢ गणना के समय लघु को (।) चिन्ह से और गुरु को (ऽ) से प्रकट किया जाता हैं । **उदाहरण के लिए -** पारस में 4 एवं परख में 3 मात्राएँ है।

	लघु वर्ण: अ, इ, उ, ऋ, क, कि, कु, कृ ।, ।, ।, ।, ।, ।, ।, । **दीर्घ वर्ण:** आ, ई, ऊ, ए, ऐ, ओ, औ, अं, अः ऽ, ऽ, ऽ, ऽ, ऽ, ऽ, ऽ, ऽ, ऽ, का, की, कू, के, कै, को, कौ, कं, कः ऽ, ऽ, ऽ, ऽ, ऽ, ऽ, ऽ, ऽ, ऽ,
संख्या	➢ छन्द की पंक्तियों में वर्णों या मात्राओं की गिनती को संख्या कहते हैं।
क्रम	➢ छन्द में लघु और गुरु मात्राओं का निश्चित स्थान क्रम कहलाता है।
गण	➢ तीन वर्णों का समूह गण कहलाता है जिसका प्रयोग छन्द में लघु-गुरु क्रम को बनाए रखने हेतु किया जाता है। ➢ **कुल 8 गण होते है –** यगण, मगण, तगण, रगण, जगण, भगण, नगण, सगण।

क्र.	नाम	मात्रा–चिह्न	वर्ण–रूप उदाहरण	
1.	यगण	। ऽ ऽ	यमाता	भवानी
2.	मगण	ऽ ऽ ऽ	मातारा	मायावी
3.	तगण	ऽ ऽ ।	ताराज	आदित्य
4.	रगण	ऽ । ऽ	राजभा	भारती
5.	जगण	। ऽ ।	जभान	मिलाप
6.	भगण	ऽ । ।	भानस	भारत
7.	नगण	। । ।	नसल	कमल
8.	सगण	। । ऽ	सलगा	सरिता

गणों को याद रखने के लिए निम्नलिखित सूत्र उपयोगी है– य–मा–ता–रा–ज–भा–न–स–ल–गा

गति	➢ छन्द को पढ़ने के प्रवाह या लय को **गति** कहते हैं। ➢ निश्चित वर्णों या मात्राओं तथा यति से नियंत्रित छंद की लय या प्रवाह को **गति** कहते हैं ।
यति	➢ छन्द पढ़ते समय निश्चित स्थान में होने वाले ठहराव को **यति** की संज्ञा दी जाती है। ➢ इस विराम या यति को प्रकट करने के लिए **पूर्ण विराम या अर्द्ध विराम अथवा अल्प विराम** के चिन्हों का प्रयोग किया जाता हैं ।
तुक	➢ छन्द के पदों/पंक्तियों के अंत में मिलने वाली ध्वन्यात्मक समरूपता को **तुक** कहते हैं। ➢ जिन छंदों के चरणों की अंतिम ध्वनियाँ मिलती हैं, उन्हे **तुकांत** और जिनकी नहीं मिलती हैं उन्हे **अतुकांत छंद** कहते हैं ।

छंद के प्रकार:

छंद के मुख्यतः दो प्रकार होते है-

वर्णिक छंद:

➢ वर्णों की गिनती के आधार पर रचित छंद वर्णिक छंद कहलाते है। इसमें लघु-गुरु का स्थान भी नियत रहता है।

➢ कुछ प्रमुख वर्णिक छंद एवं उसमें निहित वर्णों की संख्या इस प्रकार है-

छंद का नाम	**वर्णों की संख्या (प्रत्येक चरण में)**	**छंद का नाम**	**वर्णों की संख्या (प्रत्येक चरण में)**
इन्द्रवज्रा	11 वर्ण	**उपेन्द्रवज्जा**	11 वर्ण
मालिनी	15 वर्ण	**वसंततिलका**	14 वर्ण

सवैया	22–26 वर्ण	**मन्दाक्रान्ता**	17 वर्ण
घनाक्षरी	31 वर्ण	**शिखरिणी**	17 वर्ण
कवित्त / मनहरण	31–33 वर्ण	**वंशस्थ**	12 वर्ण
रूप-घनाक्षरी	32 वर्ण	**द्रुतविलम्बित**	12 वर्ण
सुन्दरी सवैया	25 वर्ण	**मत्तगयन्द (मालती)**	23 वर्ण

मात्रिक छंद:

- जिस छंद में मात्राओं की गणना की जाती है या जहाँ मात्राओं का विधान स्थायी रहता है, उसे **मात्रिक छंद** कहते है।
- इसे मुख्यतः तीन रूपों में विभक्त किया जाता है-

सममात्रिक छंद		**अर्द्धसममात्रिक छंद**		**विषममात्रिक छंद**	
इस छंद के चारों चरणों में समान मात्राएँ होती है। कुछ सममात्रिक छंद इस प्रकार है-		इस छंद में विषम चरण की मात्राओं की संख्या,सम चरण की मात्राओं की संख्या से भिन्न होती है।		दो भिन्न मात्रिक छंदों के योग से इस छंद का निर्माण होता है।	
छंद	**मात्राओं की संख्या**	**छंद**	**मात्राओं की संख्या**	**छंद**	**किसका योग**
रोला	24 मात्रा	**बरवै**	12-7 मात्रा	**छप्पय**	रोला + उल्लाला
चौपाई	16 मात्रा	**सोरठा**	11-13 मात्रा		
गीतिका	26 मात्रा	**दोहा**	13-11 मात्रा	**कुण्डलियाँ**	रोला + दोहा
वीर/आल्हा	31 मात्रा	**उल्लाला**	15-13 मात्रा		
हरिगीतिका	28 मात्रा	-	-	-	-

महत्वपूर्ण तथ्य :

- **मुक्तक छंद,** छंदशास्त्र के सभी नियमों से परे एवं मुक्त होता है। इस छंद में **रचित पहली कविता निराला** की **'जूही की कली'** है।
- **रोला** छंद को **काव्यछंद** कहा गया है।
- **ला** और **गा** वर्णो को छंदशास्त्र में **दशाक्षर** कहते है।
- दोहा छंद में **यति** चरण के अंत में होती है।

छंद	**विवरण**	**उदाहरण**
दोहा	➢ अर्धसम मात्रिक छंद ➢ विषम (पहले व तीसरे) चरणों में 13-13 मात्राएँ। ➢ सम (दूसरे व चौथे) चरणों में 11-11 मात्राएँ। ➢ विषम चरणों के अंत में गुरु-लघु (ऽ।) न हों।	ऽ ।। ।।। ।ऽ। ।। ।। ।। ।।। ।ऽ। श्री गुरु चरन सरोज रज, निज मन मुकुर सुधारि। ।।।। ।।।। ।।। ।। ऽ ऽ।। ।। ऽ। वरनउँ रघुवर विमल यशु, जो दायक फल चारि।।
सोरठा	➢ अर्धसम मात्रिक छंद ➢ विषम (पहले व तीसरे) चरणों में 11-11 मात्राएँ।	।। ।ऽ। ।। ऽ। ।। ।ऽ। ऽ।। ।।। अस विचार मति धीर, तजि कुतर्क संशय सकल। ।।। ऽ। ।।ऽ। ।।ऽ।। ऽ।। ।।। भजहु राम रघुवीर, करुनाकर सुन्दर सुखद ।।

	➢ सम (दूसरे व चौथे) चरणों में 13-13 मात्राएँ। ➢ तुक विषम चरणों में मिलती है। ➢ यह छंद दोहा का उल्टा होता है।	
चौपाई	➢ सम मात्रिक छंद ➢ इसके प्रत्येक चरण में 16-16 मात्राएँ। ➢ चरण के अंत में गुरु-लघु (ऽ।) न हों। ➢ चरण के अंत में दो गुरु या दो लघु हों।	ऽ।। ।। । । ऽ ।। ऽ ऽ मंगल भवन अमंगल हारी, ।।। । ।।।। । ।। । ऽ ऽ द्रवहु सु दशरथ अजिर बिहारी।
रोला	➢ मात्रिक सम छंद ➢ इसके प्रत्येक चरण में 24-24 मात्राएँ। ➢ चरण में 11 व 13 मात्राओं के क्रम से यति।	ऽ ।। ।। ऽ ।ऽ । ऽ ।।ऽ। ।ऽ ऽ नन्दन वन था जहाँ, वहाँ मरुभूमि बनी है। । ऽ ।।। ऽ ऽ। । ऽ ऽ ऽ । । ऽ ऽ जहाँ सघन थे वृक्ष, वहाँ दावाग्नि घनी है। जहाँ मधुर मालती, सुरभि रहती थी फैली। फूट रही है आज, वहाँ पर फूट विषैली।

Toppersnotes
Unleash the topper in you

3 CHAPTER
अलंकार

- **'अलंक्रियते इति अलंकारः'**अर्थात् जो तत्व या अपादान या धर्म काव्य की सुन्दरता एवं शोभा को बढ़ाते है, वही **अलंकार** है।
- **आचार्य रामचंद्र शुक्ल के शब्दों में**"भावों का उत्कर्ष दिखाने और वस्तुओं के रूप, गुण और क्रिया का अधिक तीव्र अनुभव कराने में कभी-कभी सहायक होने वाली उक्ति **अलंकार** है। इन्होंने **अलंकार** को **काव्य की आत्मा** माना है।

> **आचार्य दण्डी** के अनुसार, **'काव्य शोभाकरान् धर्मान् अलंकारान् प्रचक्षते'** अर्थात् अलंकार काव्य के शोभा कारक धर्म या गुण हैं।

- "भावों का उत्कर्ष दिखाने और वस्तुओं के रूप, गुण क्रिया का अधिक तीव्रता से अनुभव कराने मे सहायक होने वाली उक्ति **अलंकार** हैं । "
- आचार्य **भरतमुनि** ने **'नाट्यशास्त्र'** में **4 अलंकारों** की चर्चा की है- उपमा,रूपक,दीपक,यमक।
- लंकार संप्रदाय के **प्रवर्तक आचार्य भामह** को माना गया है जिन्होंने अलंकार के **तीन प्रकार** बताये है जो इस प्रकार है-

अलंकार के प्रकार

अलंकार	**शब्दालंकार**	**अर्थालंकार**	**उभयालंकार**
मुख्य विशेषता	अलंकार का चमत्कार शब्द में निहित	अलंकार का चमत्कार शब्द में न होकर उसके अर्थ में निहित	अलंकार का चमत्कार शब्द और अर्थ दोनों में निहित
उप-प्रकार	अनुप्रास, लाटानुप्रास, यमक, श्लेष (शब्द-श्लेष), वक्रोक्ति, पुनरुक्तिप्रकाश, पुनरुक्तिवदाभास, वीप्सा	उपमा, रूपक, उत्प्रेक्षा, उदाहरण, विरोधाभास, अतिशयोक्ति, अनुप्रासिक उपमा	श्लेष (शब्द-श्लेष और अर्थ-श्लेष)

शब्दालंकार:

अनुप्रास अलंकार:

- जिस वाक्य या काव्य में **समान वर्णों की आवृति बार-बार** होती है,वहाँ **अनुप्रास अलंकार** होता है।
  उदाहरण के लिए "कहत नटत रीझत खिलत मिलत लजियात "।
- **इसके मुख्य भेद इस प्रकार है-**

भेद	**मुख्य विशेषता**	**उदाहरण**
छेकानुप्रास	एक वर्ण या वर्ण-समूह की आवृत्ति स्पष्टतः केवल एक बार हो	*"मोहिनी मूरत साँवरी सूरत" में 'म' एवं 'स' की आवृति*
वृत्यनुप्रास	एक वर्ण या वर्ण-समूह की आवृत्ति दो से अधिक बार हो	*"तरनि तनूजा तट तमाल तरुवर बहु छाए।"*

श्रुत्यनुप्रास	एक ही उच्चारण स्थान से निकलने वाले वर्णों की आवृत्ति होना	*"गगन घन गर्जन घेरि घन घोर।"(कंठ्य)*
अंत्यानुप्रास	वाक्य या पद्य-पंक्ति के अंत में समान वर्ण या ध्वनि की पुनरावृत्ति होना	*"राम चले वनवास को, सीता भी संग चली। लक्ष्मण साथ चले, दुख हरन चले।"*
लाटानुप्रास	कोई शब्द अनेक बार आये,किन्तु अर्थ हमेशा समान हो	पूत सपूत तो क्यों धन संचै ? पूत कपूत तो क्यों धन संचै ?

यमक अलंकार:

- जब एक ही वर्ण या **वर्ण-समूह अलग-अलग अर्थों में दो या दो से अधिक बार** प्रयुक्त होता है तो वहाँ **यमक अलंकार** होता है।
  उदाहरण के लिए - "कनक-कनक ते सौ गुनी" में एक 'कनक' सोने के लिए तो एक 'कनक' धतूरे के लिए प्रयुक्त।

श्लेष अलंकार:

- जब वाक्य में **कोई शब्द बिना आवृति** के या **एक ही बार प्रयुक्त हो**,लेकिन उसके अर्थ **दो या दो से अधिक निकलते हो** तो उसे **श्लेष अलंकार** कहा जाता है।
  उदाहरण के लिए - "पानी गये न उबरै मोती मानुष चून" में 'पानी' के तीन अर्थ है- चमक, प्रतिष्ठा या इज्जत, जल।
- "जब कोई शब्द अपने **एक से अधिक अर्थ प्रकट करे** तो उस शब्द के कारण वहाँ **शब्द श्लेष** होता है और जब श्लेष का चमत्कार शब्द के स्थान पर उसके अर्थ में निहित हो तो वहाँ **अर्थ श्लेष** होता है। **अर्थ** श्लेष में शब्द का पर्यायवाची शब्द रख देने पर भी **श्लेष** का चमत्कार बना रहता है।"

वक्रोक्ति अलंकार:

- यह **अलंकार** वहाँ होता है जहाँ **वक्ता** द्वारा कहे गये **शब्द का श्रोता** द्वारा **अन्य या भिन्न कल्पित अर्थ** निकाला जाता है।
  उदाहरण के लिए - "कौ तुम ? हैं घनश्याम हम, तो बरसो कित जाय" में राधा-कृष्ण के संवाद में राधा द्वारा 'घनश्याम' को कृष्ण की बजाय काला बादल समझना।

विप्सा अलंकार:

- जब किसी शब्द की **पुनरावृत्ति** तो होती है किन्तु उसका अर्थ हमेशा एक ही रहता है तो उस स्थिति में **विप्सा अलंकार** माना जाता है।
  उदाहरण के लिए - "राम-राम यह क्या हो गया"।

अर्थालंकार

उपमा अलंकार:

- जहाँ **रंग, रूप, गुण या स्वभाव** आदि के आधार पर **दो वस्तुओं में तुलना या साम्यता** प्रदर्शित की जाती है तो वहाँ **उपमा अलंकार** होता है।
- **उदाहरण के लिए -** "मुख कमल-सा खिल गया" में 'मुख' उपमेय है,'कमल' उपमान है,'सा' समता वाचक शब्द है और 'खिल गया' साधारण गुण धर्म।

उपमा अलंकार के चार अंग

उपमेय	जिस वस्तु की उपमान के साथ समानता का वर्णन होता है, उस वस्तु को उपमेय कहा जाता है।
उपमान	जिस वस्तु के साथ उपमेय की समानता दिखाई जाती है, वह वस्तु उपमान कहलाती है।
समान धर्म	उपमेय और उपमान में समान रूप से पाए जाने वाला धर्म (गुण) समान धर्म कहलाता है।
वाचक शब्द	पमेय और उपमान को समान धर्म के साथ जोड़ने वाले शब्द को वाचक शब्द कहा जाता है।

उपमा के भेद

पूर्णोपमा	लुप्तोपमा	मालोपमा
जहाँ उपमा अलंकार के चारों अंग वर्णित हों ।	जब चारों अंगों में से कोई एक या एकाधिक अंग लुप्त हो।	जब किसी एक ही उपमेय की तुलना एकाधिक उपमानों से की जाए ।

रूपक अलंकार:

- रूपक अलंकार तब होता है जब उपमेय, उपमान का रूप धारण कर लेता है।

  उदाहरण के लिए - ”चरन-सरोज पखारन लागा” में ‘चरन’ द्वारा ‘कमल’ का रूप धारण करना।

  "उदित उदय गिरि मंच पर, रघुवर बाल पतंग । विकसे संत सरोज, मुख, हरखे लोचन भृंग ।।"

  यहाँ 'मंच', 'रघुवर', 'मुख' और 'लोचन' जो उपमेय है, उनको 'उदयगिरि', 'बाल-पतंग', 'सरोज' और 'भृंग' उपमानों से अभिन्न प्रकट किया गया है।

रुपक के भेद

सांग रुपक	निरंग रुपक	परंपरित रुपक
जहाँ उपमेय पर उपमान का सर्वांग आरोप हो	जहां उपमेय पर उपमान का आरोप सर्वांग न हो ।	जहाँ मुख्य रूपक किसी दूसरे रूपक पर अवलंबित हो या जहाँ एक आरोप दूसरे का कारण बनता हुआ दिखाया जाए वहाँ परंपरित रूपक होता है ।

उत्प्रेक्षा अलंकार:

- यहाँ उपमेय उपमान का रूप तो धारण नहीं करता, लेकिन उपमेय के उपमान होने की बलपूर्वक सम्भावना व्यक्त की जाती है। इस सम्भावना हेतु मनु, जानो, जनु आदि जैसे शब्द प्रयुक्त किये जाते है।

  उदाहरण के लिए - “सिर कट गया उसका वहाँ मानो अरुण रंग का घड़ा।”

उत्प्रेक्षा के भेद

वस्तूत्प्रेक्षा	हेतूत्प्रेक्षा	फलोत्प्रेक्षा
जहाँ किसी वस्तु में किसी वस्तु की सम्भावना व्यक्त की जाए वहाँ 'वस्तुत्प्रेक्षा' होती है ।	जहाँ अहेतु में अर्थात् जो कारण न हो, उसमें हेतु की सम्भावना व्यक्ति की जाए वहाँ 'हेतूत्प्रेक्षा' होती है ।	जहाँ अफल में फल की सम्भावना व्यक्त की जाए वहाँ 'फलोत्प्रेक्षा' होती है ।
"लट लटकनि मनु मत्त मधुपगन माधुरी मधुर पिए।"	"अरुन भए कोमल चरन, भुवि चलबे ते मानु ।"	"तव पद समता को कमल, जन सेक्त इक पाँय ।"

विरोधाभास अलंकार:

- शब्द के अनुरूप ही विरोधाभास अलंकार उस स्थिति में होता है जब वास्तविक विरोध न होते हुए भी विरोध का आभास होता है।

  उदाहरण के लिए - “ज्यों-ज्यों बूड़े स्याम रंग त्यों-त्यों उज्ज्वल होय।”

अतिशयोक्ति अलंकार:

- जब किसी व्यक्ति या वस्तु की विशेषताओं या महानता को बढ़ा-चढ़ाकर बताया जाता हो तो वहाँ अतिशयोक्ति अलंकार होता है।

  उदहारण के लिए- "देखो दो-दो मेघ बरसते, मैं प्यासी की प्यासी।"

अनन्वय अलंकार:

- जब कवि को उपमेय की तुलना करने के लिए कोई श्रेष्ठ उपमान न मिले तब वहाँ अनन्वय अलंकार माना जाता है।

  उदाहरण के लिए - "हरि अनंत, हरि कथा अनंता।"

संदेह अलंकार:

- इसमें कवि द्वारा उपमेय को दिए गये उपमानों में संशय या संदेह की भावना रहती है तथा उनमें तर्क-वितर्क की सम्भावना छूपी रहती है।

भ्रांतिमान अलंकार:

- जब रंग,रूप या गुणों की साम्यता के कारण दो वस्तुओं में भ्रम की स्थिति पैदा हो जाती है तो वहाँ भ्रांतिमान अलंकार होता है।

  उदहारण के लिए- "तोते ने निज ठौरे चलाई,जामुन का फल उसे समझकर।"

विभावना अलंकार:

- जब बिना किसी कारण के ही कार्य सम्पादित हो जाता है तो उस स्थिति में विभावना अलंकार माना जाता है।

  उदाहरण के लिए - बिनु पग चलै सुनै बिनु काना, कर बिनु करम करै विधि नाना।

  इसी के ठीक विपरीत,कारण होते हुए भी कार्य न होने की स्थिति में **विशेषोक्ति अलंकार** होता है।

ब्याजस्तुति अलंकार:

- जहाँ किसी व्यक्ति या वस्तु की प्रथमदृष्टया निंदा प्रतीत होती है लेकिन वास्तव में उसकी प्रशंसा की गई हो तो वहाँ ब्याजस्तुति अलंकार होता है।

  उदाहरण के लिए - "गंगा क्यों टेड़ी चलती हो। दुष्टों को भी शिव कर देती हो।"

  इसी के ठीक विपरीत स्थिति हो तो वहाँ **ब्याजनिंदा अलंकार** माना जायेगा।

  जैसे- "नेता महान, किसी का बेटा नहीं सैन्य जवान।"

Toppersnotes Unleash the topper in you

15 CHAPTER Tense

Tense:

a. Tense indicates both the **time and the state** of the action. (Tense समय के साथ क्रिया की state के बारे में बताता है)

Types of tenses:

Tense	Name of the Tense	हिंदी में पहचान	Helping Verbs	Form of Verb
Present	Present Indefinite	ता है , ती है	Hidden in verb (do/does)	V_1+s or es
	Present Continuous	रहा है, रही है, रहे हैं	is/am/are	V_1 + ing
	Present Perfect	चुका है, चुकी है, चुके हैं	has/have	V_3
	Present Perfect Continuous	से रहा है, से रही है, से रहे हैं	has been/ have been	V_1 + ing
Past	Past Indefinite	था, थी, थे	Hidden in verb (did)	V_2
	Past Continuous	रहा था, रही थी, रहे थे	was/were	V_1 + ing
	Past Perfect	चुका था, चुकी थी, चुके थे	had	V_3
	Past Perfect Continuous	से रहा था, से रही थी, से रहे थे	had been	V_1+ ing
Future	Future Indefinite	गा , गे, गी	will/shall	V_1
	Future Continuous	रहा होगा, रही होगी,	will/shall	be V_1 + ing
	Future Perfect	चुका होगा, चुकी होगी	will/shall	have V_3
	Future Perfect Continuous	से रहा होगा , से रही होगी	will/shall	have been V_1 + ing

Action:

1. **At a time** → regular action → **Indefinite tense**
2. **Continue** → continues action → **Continuous tense**
3. **Done** → action is complete → **Perfect tense**
4. **Action continues with particular time** → **Perfect continuous tense**

Indefinite tense:

Present Indefinite tense:

➢ The present indefinite tense (also called simple present tense) is used to describe actions or situations that are **habitual, general truths, or facts** those are always true.

➢ **Structure**

1	Positive form	Subject + V_1 / V1+s/es + Object
2	Negative form	Subject + do/does + not + V_1 + Object
3	Interrogative form	Do/does + subject + V_1 + Object?

Rule 1: Present Indefinite tense का प्रयोग निम्नलिखित जगहों या शर्तों पर किया जाता हैं।

- ✓ **Regular activity**: Daily/ always / Regularly → He always writes a poem.
- ✓ **Universal truth**: → The sun rises in the east.
- ✓ **Hobby / Habit:** → I play the guitar.
- ✓ **Permanent activity**: Every day / every night → I read a novel once a week.
- ✓ **Newspaper headlines / sports commentary**: → Sachin strikes the ball beautifully.
- ✓ **Temporary action**: → I am at work.
- ✓ **Emotions / feeling**: Angry/ Hate/ Love/ Fond / Think etc.

Example

a. Do you want me to come with you to the dentist?
b. We must go tomorrow because the bank is not open on Mondays.
c. He goes every day for a morning walk.
d. Honesty is the best policy.

Rule 2: Time expressing adverb के साथ हमेशा present indefinite tense का प्रयोग किया जाता है

➢ **Time expressing adverb**: Never, hardly, scarcely, seldom, often, always, often, regularly, once a day.

Example

a. She always plays the piano in the evening.
b. They rarely visit their grandparents.

Rule 3: If, unless, until, as soon as, as long as, as for as, मे Future tense की बात की जाये तो हमेशा present indefinite tense होता है

Example

a. Unless aid arrives within the next few weeks thousands will starving.
b. If I come, I shall help him.

Rule 4:_यदि future planning fixed है तो उसे present indefinite में बताते है।

Example

a. The PM leaves for Mumbai next month.

Past indefinite tense:

➢ The past indefinite tense, also known as the simple past tense, is used to describe **actions those happened and were completed at a specific point** in the past.

➢ **Structure**

1	Positive form	Subject + V_2 + Object
2	Negative form	Subject + did + not + V_1 + Object
3	Interrogative form	Did + subject + V_1 + Object?

Rule 1:_Past time expressing adverb के साथ past indefinite tense का प्रयोग किया जाता है।

➢ **Past time expressing adverb:**, ago, the day before, last, yesterday, previous night etc.

Example

a. The thieves entered a house at night and decamped with valuables worth Rs. 50,000.
b. She hung up the clothes in the closet.
c. Did you bake the chocolate cake yourself that time?

Rule 2: It's time, It's high time, It's about time, by the time के साथ past indefinite tense का प्रयोग होता है।

Example

a. She had left by the time I reached home.
b. It's high time we renovated our old house.
c. It's time she went to the school to bring her children.

Rule 3: Past habit को बताने के लिए past indefinite का प्रयोग किया जाता है या **used to** और **would** के साथ **V_1** का प्रयोग होता है ।

Example

a. I played cricket in my childhood with my sister.
b. Biden wrote a letter to the Russian President to restrain from war.

Rule 4: जिन sentence में ऐसी wish के बारे में बताया जाये जो कभी पूरी नही हो पाए एसे sentence **I wish, He/she wishes, as if, as though** से शुरू होते है उनमे **plural verb** का प्रयोग होता है ।

Example

a. If I were the prime minister of India, I would work wonders.

Future indefinite tense:

- The future indefinite tense, also known as the simple future tense, is used to describe actions that will happen in the future. It is used for **predictions, promises, decisions made at the moment of speaking, and future facts**.
  - ✓ **Will:** He/ She/ It/ They/ You / Nouns
  - ✓ **Shall:** I / We

1	Positive form	Subject +will/shall+ V_1 + Object
2	Negative form	Subject + will/shall+ not + V_1 + Object
3	Interrogative form	Will/ shall + subject + V_1 + Object?

Example

a. We shall go for a trip to Mount Abu tomorrow.
b. Sam will go to the office tomorrow to get back his original documents lying with the staff.
c. I shall certainly write to you when I reach Bengaluru.

Continuous tense:

- **ऐसे** action **जो** work **के** continue **होने का बोध कराते है ।**

Present continuous tense:

- The present continuous tense is used to describe actions those are happening at the **moment of speaking or actions** those are happening around the present time.
  - ✓ **Is**: He/ She/ It/ Noun(singular)
  - ✓ **Are:** You/ We/They/ Noun(plural)
  - ✓ **Am:** I
- **Structure**

1	Positive form	Subject + is/are/am + V_{ing} + Object
2	Negative form	Subject + is/are/am + not + V_{ing} + Object
3	Interrogative form	Is/are/am + subject + V_{ing} + Object?

Example

a. Why is he crying like that?

Rule 1: Now/ Now a days/ These days / At this moment/ At this time के साथ हमेशा – is / am/are + V_{ing} का use होता है।

Example

a. She is working on her project at this moment.
b. People are using smartphones more these days.

Rule 2: ऐसे **action** जो चल रहे होते हे लेकिन दिखाई नही देते है उन्हें बताने के लिए भी **present continuous** का **use** किया जाता है ।

Example

a. Coastal area is getting submerged.
b. It appears to me that you are plotting against your friends and their parents.

Past continuous tense:

- The past continuous tense is used to talk about actions that were happening at a **specific time in the past**.
  - ✓ **Was:** I/He/She/It/ Noun(singular)
  - ✓ **Were:** we/you/ they/Noun (plural)
- **Structure**

1	Positive form	Subject + was/were + V_{ing} + Object
2	Negative form	Subject + was/were + not + V_{ing} + Object
3	Interrogative form	Was/were + subject + V_{ing} + Object?

Rule 1:_Those days/At that moment/ At that time के साथ past continuous tense का प्रयोग किया जाता है ।

Example

a. She was studying at that moment.
b. While I was driving the car, my brother was talking over the phone to his kid.
c. One night, a hunter was sleeping near a river when he began to dream.
d. The tired and vexed travellers were waiting at the airport for a long time.
e. Nithi was not feeling well, yet she decided to go to work.
f. Which movie were you watching on television when I called you?

Future continuous tense:

- **Will be:** He/she/it /they / you/noun
- **Shall be:** I /We
- **Structure**

1	Positive form	Subject + will be/shall be + V_{ing} + Object
2	Negative form	Subject + will/shall + not + be + V_{ing} + Object
3	Interrogative form	Will/shall + subject +be+ V_{ing} + Object?

Example

a. She will be writing her examination by this time tomorrow.
b. I shall be playing for four hours.
c. In 2030, advancements in technology will be reshaping the way we live, work and interact with each other.
d. In August, she will be enjoying all the fruits her grandmother planted last January.
e. Sarah will be singing at the concert on Saturday.

Rules related to -ing:

कुछ **verb** ऐसी होती है जिनके साथ **ing** का प्रयोग नही किया जाता है इसकी वजह से इनका प्रयोग **continuous tense** में देखने को नही मिलता है

- **Verb of perception:** See/hear/think/taste/smell/recognise /notice/ prefer/ please.
- **Verb of thinking:** Think/mind /remember/mean/know/suppose
- **Verb of possession:** Own/belong/comprises/contain/consist/posses
- **Verb of express feeling:** Hate/love/believe/ like/dislike/want/wish/desire/ trust/ agree.
- **Verb in general**: Look/appear/seem/require/ refuse
  इनमे से कुछ verb ऐसी होती है जिनके साथ -ing लगाकर उनका meaning बदला जाता है
- **Have**
  - ✓ **Have:** Possession
  - ✓ **Have+ -ing : Having:** Fun or eat
- **See**
  - ✓ **See:** देखना
  - ✓ **Seeing:** खोजना / मिलना
- **Hear**
  - ✓ **Hear:** सुनना
  - ✓ **Hearing**: सुनवाई

- **Look**
  - ✓ **Look:** देखना
  - ✓ **Looking:** एक तरफ देखना या गौर से देखना
- **Feel**
  - ✓ **Feel**: महसूस करना
  - ✓ **Feeling**: to examine something by touch.
- **Appear**
  - ✓ **Appear:** प्रतीत होना
  - ✓ **Appearing**: उपस्थित होना, प्रकाशित होने

Note: यदि इन verbs का प्रयोग preposition के बाद करते हे तो इनके साथ -ing form का प्रयोग होता है Example: to seeing, with hearing.

Perfect tense:

- Work has already been completed.

Present perfect tense:

- **Helping Verb**
  - ✓ **Has:** He/she/it/name/noun(singular)
  - ✓ **Have:** You/we/they/ I / Noun (plural)
- **Structure**

1	Positive form	Subject + has/have + V_3 + Object
2	Negative form	Subject + has/have + not + V_3 + Object
3	Interrogative form	Has/have + subject + V_3 + Object?

Rule 1: Just/ lately/yet/already/so far/until now इनका प्रयोग **present perfect tense** में होता है

- Sub + have/has + just + V_3 + object.
- Sub + have/has + V_3 + object + lately.

Example

a. We haven't seen Rohit for the last two months.
b. The construction of the new business school has led to a sudden rise in the population of our area.
c. The recent discoveries have raised hopes about possible applications.
d. One of my friends has gone to Goa for a holiday.
e. Have you ever spoken to anyone about your problems?
f. She has been me until now so don't rebuke her for getting late.
g. I have sung 'Let It Go' before the crowd of thousands of people.

Rule 2: Since का प्रयोग **conjunction** की तरह **present perfect tense** के साथ होता है ।

Example

a. He has not taken any leave since he joined this job.

Past perfect tense:

- This tense is used to describe an **action that was completed before another action** in the past.
  - ✓ **Had:** I/we/you/he/she/it/they/noun
- **Structure**

1	Positive form	Subject + had + V_3 + Object
2	Negative form	Subject + had + not + V_3 + Object
3	Interrogative form	Had + subject + V_3 + Object?

Rule 1:_When/ while/ before / after इनका प्रयोग past perfect tense मे होता है ।

- Past perfect + **<u>when</u>** +Past indefinite
- Past continuous **<u>While</u>** +Past continuous
- Past perfect + **<u>Before</u>** + Past indefinite
- Past indefinite + **<u>After</u>** + Past perfect

Example

a. When we went to the cinema, the film had already started.
b. The concert had started when he reached the venue.
c. The thief had escaped before I opened the gate.